'अप्प दीपो भव'

वॉयस ऑफ बुद्धा

Postal Reg. No.-DL(ND)-11/6144/2013-15
WPP Licence No.- U(C)-101/2013-15
R.N.I. No. 68180/98

Date of Publication : 31.05.2015
Date of Posting on concessional rate :
2-3 & 16-17 of each fortnight

मूल्य : पाँच रूपये

प्रेषक : डॉ0 उदित राज (राम राज) चेयरमैन – जस्टिस पब्लिकेशंस, टी–22, अतुल ग्रोव रोड, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली–110001, फोन : 23354841–42

Website : www.uditraj.com E-mail: dr.uditraj@gmail.com

● वर्ष : 18 ● अंक 13 ● पाक्षिक ● द्विभाषी ● कुल पृष्ठ संख्या 8 ● 16 से 31 मई, 2015

परिसंघ ने पदोन्नति में आरक्षण लागू करने पर मुख्यमंत्री, श्री खट्टर का स्वागत किया

- उच्च न्यायालय मे पदोन्नति में आरक्षण की पैरवी करेगी हरियाणा सरकार
- परिसंघ के रा. अध्यक्ष, डॉ. उदित राज ने हरियाणा के मुख्यमंत्री से की दलित कर्मचारियों की वकालत
- हरियाणा में अजा/जजा के खाली पड़े पद भरे जाएंगें
- भूमिहीन वंचितों को प्लाट देने की नीति बनेगी
- बी.पी.एल. का सर्वे कराकर पात्र लोगों का नाम जोड़ा जाएगा।
- हरियाणा में अनुसूचित जाति आयोग का गठन होगा।
- हरियाणा के प्रत्येक जिले और विभाग की भागीदारी अच्छी रही

भारी जनसमूह का नेतृत्व करते हुए हरियाणा के मुख्यमंत्री, श्री मनोहर लाल खट्टर एवं अजा/जजा परिसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. उदित राज

मुख्यमंत्री, श्री मनोहर लाल खट्टर, परिसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष व सांसद डॉ0 उदित, सांसद – श्री रमेश कौशिक, हरियाणा की सामाजिक कल्याण राज्य मंत्री – कृष्न वेदी, पांचवी बार विधायक बने – कृष्णलाल पंवार, सामाजिक कल्याण मंत्री – श्रीमती कविता जैन आदि का परिसंघ की हरियाणा इकाई ने 30 मई, 2015 को ऋषिकुंज स्कूल के ऑडोटोरियम हाल, सोनीपत में भव्य स्वागत किया।

पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय में हरियाणा सरकार पदोन्नति में आरक्षण की पैरवी करेगी। उक्त घोषणा हरियाणा के मुख्यमंत्री, श्री मनोहर लाल खट्टर ने हरियाणा परिसंघ के प्रादेशिक सम्मान व अधिकार समारोह में अभिनन्दन किए जाने पर मुख्य अतिथि के तौर पर की। कार्यक्रम की अध्यक्षता, परिसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष व सांसद डॉ. उदित राज ने की। श्री खट्टर ने घोषणा की कि हरियाणा सरकार प्रदेश में अनुसूचित जाति आयोग का गठन करेगी, भूमिहीनों को प्लाट आबंटित करने के लिए सर्वे कराया जाएगा तथा पात्र लोगों को 100–100 वर्ग गज के प्लाट आबंटित किए जाएंगें एवं बी.पी.एल. सूची में भी पात्र लोगों के नाम सम्मिलित किए जाएंगें। श्री खट्टर ने कहा कि भाजपा सरकार दलितों एवं गरीबों के द्वारा बनायी गयी सरकार है तथा इसमें सबके साथ दलित समाज के आरक्षण एवं अधिकारों का भी पूरा ख्याल रखा जाएगा। कार्यक्रम में हजारों अनुसूचित जाति के कर्मचारियों, अधिकारियों एवं जनप्रतिनिधियों की भीड़ देखकर श्री खट्टर और डॉ0 उदित राज गदगद थे और इन्होंने परिसंघ के प्रदेश अध्यक्ष, श्री सत्यप्रकाश जरावता एवं सोनीपत के जिलाध्यक्ष, सत्यवान भाटिया की पीठ थपथपाकर प्रसंशा की।

डॉ0 उदित राज ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रदेश के मुख्यमंत्री, श्री खट्टर को हरियाणा के दलित कर्मचारियों एवं अधिकारियों तथा गरीबों के अधिकार एवं सम्मान की पैरवी की और प्रदेश सरकार द्वारा परिसंघ की मांगों पर विचार करने के लिए जोर–दार वकालत की। उन्होंने कहा कि हरियाणा दलित अत्याचारों के मामले में अव्वल रहा है, इसका सबसे बड़ा कारण है कि दलित उत्पीड़न पर पिछली सरकारों का ढुलमुल रवैया । इसी दलित अत्याचार से तंग आकर पहले केन्द्र में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनवाने एवं फिर हरियाणा में भी भाजपा की सरकार बनवाने में मेरे नेतृत्व में चल रहे अनुसूचित जाति/जन जाति परिसंघ ने सहयोग किया। अब श्री मनोहर लाल खट्टर के मुख्यमंत्री रहते हुए उम्मीद की जाती है कि दलित उत्पीड़न पर इस प्रदेश में पूरी तरह रो क लगेगी और दलितों का सर्वांगीण विकास होगा। खट्टर सरकार सबका साथ – सबका विकास करने के लिए तत्पर है। कार्यक्रम में प्रदेश की सामाजिक कल्याणमंत्री कविता जैन ने कहा कि यह उनका सौभाग्य है कि उन्हें सामाजिक कल्याण मंत्रालय मिला ताकि गरीबों व दलितों की सेवा कर सकें। कार्यक्रम को कृष्णवेदी, सामाजिक कल्याणमंत्री हरियाणा सरकार, ने सम्बोधित करते हुए कहा कि हरियाणा प्रदेश के अंदर सफाई कर्मचारियों से लेकर उच्च पदों तक जो ठेकेदारी प्रथा चल रही है, जिसे अतिशीघ्र समाप्त किया जाए, 36000 बैकलाग वैकेंसीज को भरने के लिए मुख्यमंत्री से मांग की और यह उम्मीद भी की कि हरियाणा में दलितों के विकास की लहर अब दौड़ेगी।

क्षेत्रीय सांसद – रमेश कौशिक, इसराना से पांचवी बार विधायक बने – कृष्णलाल पवार, परिसंघ के प्रदेश अध्यक्ष – सत्य प्रकाश जरावता, चंडीगढ़ परिसंघ के प्रभारी – सत्यवान सरोहा, पंचकुला के संयोजक – धर्मपाल पुनिया, पूर्व प्रदेशाध्यक्ष – महासिंह भूरानिया, परिसंघ के जिले के मेजबान जिलाध्यक्ष, सत्यवान भाटिया आदि ने कार्यक्रम को सम्बोधित किया। फरीदाबाद से साधू सिंह सिरोहा, विश्वनाथ सिंह, अनूप सिंह एवं निर्मल सिंह चौहान, पलवल से मदन आर्य, मनीष व रामफल, रेवाड़ी से महेश दत्त और डॉ0 ताराचंद तंवर, नारनौल से ओम प्रकाश नारवाल, ओम नारायण व कंवर सिंह, मेवात से राजेश एवं विश्राम, गुड़गांव से ऊदल, जगदेव, महेश प्रधान व बनवारी लाल, झज्जर से राजेश शास्त्री, विकास वाल्मीकि, सुनीता चौहान, रमेश और भागमल, भिवानी से अजीत दहिया, राजेन्द्र जोगपाल व चिरंजीलाल सांवरिया, हिसार से बलबीर चंद मजोका, सिरसा से आत्म प्रकाश, रोहतक से राजेन्द्र प्रसाद व रवि महेन्द्रा, जींद से वजीरचंद मेहरा एवं रामभज भुक्कल, गोहाना से रामहेर मान, सोनीपत से राजेश अहलावत, जोगेन्द्र सिंह, जसवंत सिंह, समुद्र सिंह व एस.बी. श्योरान, पानीपत से शशिकांत, बिजली सिंह, सुभाष गिल, राममेहर, धर्मेन्द्र, सुनील व महावीर, करनाल से श्रीमती मीना चौहान, कुरुक्षेत्र से रामपाल पाली, अम्बाला से जीत सिंह शेर, कैथल से राजकुमार एवं महेन्द्र सिंह, यमुनानगर से महेन्द्र सिंह आदि ने कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग किया और हजारों लोगों के साथ कार्यक्रम में शिरकत की।

दिल्ली से परिसंघ के राष्ट्रीय सचिव – श्री ब्रह्म प्रकाश एवं राष्ट्रीय सलाहकार – श्री परमेन्द्र सैकड़ों समर्थकों के साथ उपरोक्त कार्यक्रम में भाग लिया। दिल्ली प्रदेश परिसंघ की कार्यकारिणी ने भी उपरोक्त कार्यक्रम में अपने प्रमुख पदाधिकारियों के साथ शिरकत किया, इनमें प्रमुख थे – डॉ0 नाहर सिंह – अध्यक्ष, उपाध्यक्ष – श्री कर्मसिंह कर्मा, हरियाणा के प्रभारी – भानु पुनिया, महामंत्री – अंजू काजल, महाराष्ट्र के प्रभारी – दया राम, गुजरात के प्रभारी – बलबीर सिंह, दिल्ली प्रदेश सचिव – आर.एस. हंस, पश्चिम बंगाल के प्रभारी – सत्य नारायण, हरि प्रकाश एवं संजय राज आदि।

–सी.एल. मौर्य

डांगावास की दलित हत्या के जिम्मेदार कुछ हम भी हैं

14 मई, 2015 को डांगावास, नागौर, राजस्थान में जाटों द्वारा दलितों की हत्याकांड की जितनी भी निंदा की जाए कम है। इस घटना में तीन दलितों की हत्या मौके पर हुई और दो की अस्पताल में। तमाम दलित समाज के लोग और विशेष रूप से परिसंघ के साथी दुख और आक्रोश प्रकट करने लगे। तो उनसे मैंने कहा कि केवल इतने से यह जुल्म और अत्याचार की दास्तां को खत्म नहीं किया जा सकता। हमें कुछ न कुछ करना चाहिए। परिसंघ के लोगों को इस घटना के प्रतिशोध में सदस्यता, संगठन और संसाधन जुटाने में तेजी करना चाहिए। हमने 10 लाख सदस्य बनाने का लक्ष्य रखा है और ऐसी घटनाएं भविष्य में न हों, तेजी से संगठन को ताक़तवर बनाएं, यही इसका समाधान है। मनुवादियों से उम्मीद करना कि वे अत्याचार नहीं करेंगें, यह हमारी नादानी होगी। अगर ऐसी सड़ी–गली क्रूर व्यवस्था को समाप्त करना है तो हमें अपने आप को ही संगठित करना पड़ेगा। हमारी संख्या भी ज्यादा है। अगर ऐसी घटनाएं होती हैं तो हमारे निकम्मेपन की वजह से। इसीलिए हम कह सकते हैं कि हम भी कुछ ऐसे कुकृत्यों के लिए जिम्मेदार हैं।

– डॉ. उदित राज,
राष्ट्रीय अध्यक्ष, अजा/जजा परिसंघ

अम्बेडकर पर आधारित रिंगटोन रखने पर दलित युवक की हत्या

महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले के शिरडी शहर में बाबा साहेब अम्बेडकर पर आधारित एक गाने की रिंगटोन रखने पर एक 21 साल के दलित युवक की आठ युवकों ने कथित तौर पर हत्या कर दी। आठ आरोपियों में चार को गिरफ्तार किया जा चुका है। पुलिस ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। शिरडी थाने के एक अधिकारी ने बताया कि दो हमलावरों को गोवा से, एक को पुणे से जबकि चौथे को शिरडी से गिरफ्तार आरोपियों की चहचान विशाल कोटे, रूपेश वाडेकर, एस वाडेकर और सुनील जाधव के तौर पर हुई हैं। मामले में शामिल चार अन्य आरोपी अभी फरार हैं। अधिकरी ने बताया कि 16 मई को करीब दो बजे नर्सिंग का छात्र सागर शेजवाल अपने दो चचेरे भाइयों के साथ एक शराब की दुकान पर बैठा हुआ था, तभी उसके फोन पर एक फोन अया। वहा शिरडी में एक शदी मे शामिल होने आया था।

अधिकारी ने बताया कि फोन की जो रिंगटोन बजी वो अम्बेडकर द्वारा दलितों के लिए किए गए कार्यो की तारीफ करती है। यह सुनकर वहां बैठे आठ युवक भड़क गए और उससे इस बंद करने को कहा। उन्होंने बताया कि इसके बाद दोनो पक्षों में बहस होने लगी और हमलावरों ने सागर को शराब की बोतल से मारा और फिर लातों और घूसों से पीटने लगे। फिर वे उसे घसीट कर बाहर लेकर गए, उसे मोटरसाइकिल पर रखा और उसे पास के जंगल में ले गए। पुलिस ने बताया कि उसका शव शिंगवे गांव के करीब 16 मई की शाम को ही मिला गया था। उसके शव पर दो पहिया वाहन और पत्थर से कुचलने के निशान हैं। हमलावर प्रभावी मराठा और ओबीसी समुदाय से ताल्लुक रखते हैं। उन्होंने अपनी बाइक कथित तौर पर कई बार सागर पर चढ़ाई और उसके शव को विक्रत कर दिया।

+++

हिन्दू राष्ट्र के जाटलैंड में दलित संहार

राजस्थान का जाट बाहुल्य नागौर जिला जिसे जाटलैंड कह कर गर्व किया जाता है ,आधिकारिक रूप से अनुसूचित जाति/ जनजाति के लिए एक 'अत्याचारपरक जिला' है । यहाँ के दलित आज भी दोयम दर्जे के नागरिक की हैसियत से ही जीवन जीने को मजबूर हैं। दलित अत्याचार के निरंतर बढ़ते मामलों के लिए कुख्यात इस जाटलैंड का एक गाँव है डांगावास ,जहाँ पर तकरीबन 16 सौ जाट परिवार रहते है। इस गाँव को जाटलैंड की राजधानी कहा जाता रहा है। यहाँ पर सन 1984 तक तो दलितों को वोट डालने का अधिकार तक प्राप्त नहीं था , हालाँकि उनके वोट पड़ते थे, मगर नाम उनका और मतदान कोई और ही करता था। यह सिर्फ वोटों तक सीमित नहीं था ,जमीन के मामलों में भी कमोबेश यही हालात है। जमीन दलितों के नाम पर और कब्ज़ा दबंग जाटों का । राजस्थान काश्तकारी अधिनियम की धारा 42 (बी) भले ही यह कहती हो कि किसी भी दलित की जमीन को कोई भी गैर दलित न तो खरीद सकता है और न ही गिरवी रख सकता है, मगर नागौर सहित पूरे राजस्थान में दलितों की लाखों एकड़ जमीन पर सवर्ण काबिज़ है, डांगावास में ही ऐसी सैंकड़ों बीघा जमीन है, जो रिकॉर्ड में तो दलित के नाम पर दर्ज है ,लेकिन उस पर अनाधिकृत रूप से जाट काबिज़ हैं।

डांगावास के एक दलित दौलाराम मेघवाल के बेटे बस्तीराम की 23 बीघा 5 बिस्वा जमीन पर चिमनाराम नामक दबंग जाट ने 1964 से कब्ज़ा कर रखा था, उसका शुरू शुरू में तो यह कहना था कि यह ज़मीन हमारे 1500 रुपये में गिरवी है, बाद में दलित बस्ती राम के दत्तक पुत्र रतना राम ने न्यायालय की मदद ले कर अपनी जमीन से चिमनाराम जाट का कब्ज़ा हटाने की गुहार करते हुए एक लम्बी लडाई लड़ी और अभी हाल ही में नतीजा उसके पक्ष में आया। दो माह पहले मिली इस जीत के बाद दलित रतना राम मेघवाल ने अपनी जमीन पर एक छोटा सा घर बना लिया और वहीं परिवार सहित रहना प्रारम्भ कर दिया। यह बात चिमनाराम जाट के बेटों ओमाराम तथा कानाराम जाट को बहुत बुरी लगी, उसने जेसीबी मशीन ला कर उक्त भूमि पर तालाब बनाना शुरू कर दिया और खेजड़ी के हरे पेड़ काट डाले। इस बात की लिखित शिकायत रतना राम मेघवाल की ओर से 21 अप्रैल 2015 को मेड़ता थाने में की गयी, लेकिन नागौर जिले के पुलिस महकमे में जाट समुदाय का प्रभाव ऐसा है कि उनके विरुद्ध कोई भी अधिकारी कार्यवाही करना तो दूर की बात है, सोच भी नहीं सकता है, इसलिए कोई कार्यवाही नहीं की गयी। इसके बाद दलितों को जान से खत्म कर दने की धमकियाँ मिलने लगी और यह भी पता चला कि जाट शीघ्र ही गाँव में एक पंचायत बुला कर दलितों से जबरन यह जमीन खाली करवाएंगे अथवा मारपीट कर सकते है ,तो इसकी भी लिखित में शिकायत 11 मई को रतना राम मेघवाल ने मेड़ता थाने को देकर अपनी जान माल की सुरक्षा की गुहार की, फिर भी पुलिस ने कोई कार्यवाही नहीं की। 14 मई 2015 की सुबह 9 बजे के आस पास डांगावास गाँव में जाट समुदाय के लोगों ने अवैध पंचायत बुलाई ,जिसमें ज्यादातर वे लोग बुलाये गए ,जिन्होंने दलितों के नाम वाली जमीनों पर गैरकानूनी कब्ज़े कर रखे हैं ,इस हितसमूह ने तय किया कि अगर रतना राम मेघवाल इस तरह अपनी ज़मीन वापस ले लेगा तो ऐसे तो सैंकड़ो बीघा जमीन और भी है जो हमें छोडनी पड़ेगी, अतः हर हाल में दलितों का मुंह बंद करने का सर्वसम्मत फैसला करके सब लोग हमसलाह हो कर हथियारों, लाठियों, बंदुको, लोहे के सरियों इत्यादि से लैश होकर तकरीबन 500 लोगों की भीड़ डांगावास गाँव से 2 किमी दूरी पर स्थित उस जमीन पर पंहुची ,जहाँ पर रतना राम मेघवाल और उसके परिजन रह रहे थे। उस समय खेत पर स्थित इस घर में 16 दलित महिला पुरुष मौजूद थे ,जिनमें पुरोहितवासनी पादुकला के पोखर राम तथा गणपत राम मेघवाल भी शामिल थे। ये दोनों रतना राम की पुत्रवधू के सगे भाई है, अपनी बहन से मिलने आये हुए थे। दलितों को तो गाँव में हो रही पंचायत की खबर भी नहीं थी कि अचानक सैंकड़ों लोग ट्रेक्टरों और मोटर साईकलों पर सवार हो कर आ धमके और वहां मौजूद लोगों पर धावा बोल दिया। उन्होंने औरतों को एक तरफ भेज दिया ,जहाँ पर उनके साथ ज्यादती की गयी तथा विरोध करने पर उनके हाथ पांव तोड़ दिए गए, दो महिलाओं के गुप्तांगों में लकड़ियाँ घुसेड़ दी गयी, वही दूसरी ओर दलित पुरुषों पर आततायी भीड़ का कहर टूट गया । उन्हें ट्रेक्टरों से कुचल कुचल कर मारा जाने लगा ,लाठियों और लोहे के सरियों से हाथ पांव तोड़ दिए गए ,रतना राम के पुत्र मुन्ना राम पर गोली चलायी गयी ,लेकिन उसी समय किसी ने उसके सिर पर सरिये से वार कर दिया जिससे वह गिर पड़ा और गोली भीड़ के साथ आये रामपाल गोस्वामी को लग गई ,जिसने मौके पर ही दम तोड़ दिया ।

जाटों की उग्र भीड़ ने मजदूर नेता पोखर राम के ऊपर ट्रेक्टर चढ़ाया तथा उनकी आँखों में जलती हुयी लकड़ियाँ डाल दी, लिंग नौंच लिया। उनके भाई गणपत राम की आँखों में आक वृक्ष का दूध डाल कर आंखे फोड़ दी गयी। इस तरह एक पूर्व नियोजित नरसंहार के तहत पोखर राम ,रतना राम तथा पांचाराम मेघवाल की मौके पर ट्रेक्टर से कुचल कर हत्या कर दी गयी तथा गणपत राम एवं गणेश राम सहित 11 अन्य लोगों को अधमरा कर दिया गया। मौत का यह तांडव दो घंटे तक जारी रहा ,जबकि घटनास्थल से पुलिस थाना महज़ साढ़े तीन किमी दूरी पर स्थित है। लेकिन दुर्भाग्य से अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ,पुलिस उपाधीक्षक तथा मेड़ता थाने का थानेदार तीनों ही जाट होने के कारण उन्होंने सब कुछ जानते हुए भी इस तांडव के लिए पूरा समय दिया और जब सब खत्म हो गया तब मौके पर पंहुच कर सबूत मिटाने और घायलों को हटाने के काम में लगे । मनुवादी गुंडों की दादागिरी इस स्तर तक थी कि जब उन्हें लगा कि कुछ घायल जिंदा बच कर उनके विरुद्ध कभी भी सिर उठा सकते है तो उन्होंने पुलिस की मौजूदगी में मेड़ता अस्पताल पर हमला करके वहां भी घायलों की जान लेने की कोशिश की। अंततः घायलों को अजमेर उपचार के लिए भेज दिया गया और मृतको का पोस्टमार्टम करवा कर उनके अंतिम संस्कार कर दिए गए । पीड़ित दलितों के मौका बयान के आधार पर पुलिस ने बहुत ही कमजोर लचर सी एफ. आई. आर दर्ज की तथा दूसरी ओर रामपाल गोस्वामी की गोली लगाने से हुयी मौत का पूरा इलज़ाम दलितों पर डालते हुए गंभीर रूप से घायल दलितों सहित 19 लोगों के खिलाफ हत्या का बेहद मज़बूत जवाबी मुकदमा दर्ज कर लिया गया। इस तरह जालिमों ने एक सोची समझी साज़िश के तहत कर्ताधर्ता दलितों को तो जान से ही ख़त्म कर दिया ,बचे हुओं के हाथ पांव तोड़ कर सदा के लिए अपाहिज बना दिया और जो लोग उनके हाथ नहीं लगे या जिनके जिंदा बच जाने की सम्भावना है ,उनके खिलाफ हत्या जैसी संगीन धाराओं का मुकदमा लाद दिया गया ,इस तरह डांगावास में दबंग जाटों के सामने सिर उठा कर जीने की हिमाकत करने वाले दलितों को पूरा सबक सिखा दिया गया। राज्य की वसुंधराराजे की सरकार ने इस निर्मम नरसंहार को जमीनी विवाद बता कर इसे दो परिवारों की आपसी लडाई घोषित कर ज़िम्मेदारी से पल्ला झाड़ लिया। हालाँकि पुलिस ,प्रशासन और राज्य सरकार के नुमाईनदों के पास इस सवाल का कोई जवाब नहीं है कि दो पक्षों के खूनी संघर्ष में सिर्फ एक ही पक्ष के लोग क्यों मारे गए तथा घायल हुए है, दुसरे पक्ष को किसी भी प्रकार की चौट क्यों नहीं पंहुची है और जब दलितों के पास आत्मरक्षा के लिए लाठी तक नहीं थी तो रामपाल को गोली मारने के लिए उनके पास बन्दूक कहाँ से आ गयी और फिर सभी दलित या तो घायल हो गए अथवा मार डाले गए तब वह बन्दूक कौन ले गया। जिससे गोली चलायी गयी थी। मगर सच यह है कि दलितों की स्थिति गोली चलाना तो दूर की बात ,वो थप्पड़ मारने का साहस भी अब तक नहीं जुटा पाए है। 23 मई को एक और घायल गणपत राम ने भी दम तोड़ दिया है, जिसकी लाश को लावारिस बता कर गुप चुप पोस्टमार्टम कर दिया गया।

नागौर जिला दलित समुदाय के लोगों की कब्रगाह बन गया है, यहाँ पर विगत एक साल में अब तक दर्जनों दलितों की हत्यायें हो चुकी है, इसी डांगावास गाँव में जून 2014 में जाटों द्वारा मदन मेघवाल के पांव तोड़ दिए गए है, जनवरी 2015 में मोहन मेघवाल के बेटे चेनाराम की हत्या कर दी गयी, बसवानी गाँव की दलित महिला जड़ाव को जिंदा जला दिया गया, उसका बेटा भी बुरी तरह से झुलस गया। मुंडासर की एक दलित महिला को ज्यादती के बाद ट्रेक्टर के गर्म सायलेंसर से दाग दिया गया, लंगोड़ में एक दलित को जिंदा ही दफना दिया गया ,हिरड़ोदा में दलित दुल्हे को घोडी से नीचे पटक कर जान से मारने का प्रयास किया गया। इस तरह नागौर की जाटलैंड में दलितों पर कहर जारी है और राजस्थान का दलित लोकतंत्र की नई नीरों, चमचों की महारानी, प्रचंड बहुमत से जीत कर सरकार चला रही वसुंधराराजे के राज में अपनी जान के लिए भी तरस गया है । राज्य भर में दलितों पर अमानवीय अत्याचार की घटनाएँ बढ़ती जा रही है और राज्य के आला अफसर और सूबे के वजीर विदेशों में 'रिसर्जेंट राजस्थान' के नाम पर रोड शौ करते फिर रहे है। कोई भी सुनने वाला नहीं है ,राज्य के गृह मंत्री तो साफ कह चुके है कि उनके पास कोई ज़ादू की छड़ी तो है नहीं जिससे अपराधियों पर अंकुश लगा सके. पुलिस अपराधियों में भय और आम जन में विश्वास के अपने ध्येय वाक्य के ठीक विपरीत आम जन में भय और अपराधियों में विश्वास कायम करने में सफल होती दिखलाई पड़ रही है। जाटलैंड का यह निर्मम दलितसंहार संघ के कथित हिन्दुराष्ट्र में दलितों की स्थिति पर सवाल खड़ा कर रहा है।

– भंवर मेघवंशी

+++

पाठकों से अपील

'वॉयस ऑफ बुद्धा' के सभी पाठकों से निवेदन है कि जिन्होंने अभी तक वार्षिक शुल्क/शुल्क जमा नहीं किया है, वे शीघ्र ही बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा 'जस्टिस पब्लिकेशंस' के नाम से टी–22, अतुल ग्रोव रोड, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली–110001 को भेजें। शुल्क 'जस्टिस पब्लिकेशंस' के खाता संख्या 0636000102165381 जो पंजाब नेशनल बैंक की जनपथ ब्रांच में है, सीधे जमा किया जा सकता है। जमा कराने के तुरंत बाद इसकी सूचना ईमेल, दूरभाष या पत्र द्वारा दें। कृपया 'वॉयस ऑफ बुद्धा' के नाम ड्राफ्ट या पैसा न भेजें और मनीआर्डर द्वारा भी शुल्क न भेजें। जिन लोगों के पास 'वॉयस ऑफ बुद्धा' नहीं पहुंच रहा है, वे सदस्यता संख्या सहित लिखें और संबंधित डाकघर से भी सम्पर्क करें। आर्थिक स्थिति दयनीय है, अतः इस आंदोलन को सहयोग देने के लिए खुलकर दान या चंदा दें।

सहयोग राशि:

पांच वर्ष : 600 रुपए

एक वर्ष : 150 रुपए

वैदिक कालीन शूद्र नहीं है वर्तमान दलित

शूद्र आर्य समुदाय के अभिन्न, जन्म-जात और सम्मानित सदस्य थे। यह बात यजुर्वेद में उलिखित एक स्तुति से पुष्ट होती है जो प्रार्थना के रूप में कही गई है। यह इस प्रकार है। हे ईश्वर! हमें सम्मन्न करो। हमारे शासकों को संपन्न करो। वैश्यों और शूद्रों को समृध्द करों। मुझे समृद्ध करो।

यह एक उल्लेखनीय प्रार्थना है, उल्लेखनीय इस कारण, क्योंकि इससे पता चलता है कि शूद्र आर्य समुदाय का सदस्य होता था और वह उसका सम्मानित अंग था।

राजा के राज्याभिषेक के समय शूद्रों को भी ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य के समान आंमत्रित किया जाता था। वह बात महाभारत में दिए गए पाण्डवों के ज्येष्ठ भाई युधिष्ठिर के राज्याभिषेक के वर्णन से पुष्ट होती है। शूद्र ने राजतिलक के समय समारोह में भाग लिया था। नीलकंठ नाम एक प्राचीन विद्वान के अनुसार जो राज्याभिषेक समारोह का वर्णन करते है, चार प्रमुख मंत्री, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ने नए राजा का अभिषेक किया। इसके पश्चात प्रत्येक वर्ण के प्रमुखों और छोटी जातियों के प्रमुखों ने भी पवित्र जल से राजा का अभिषेक किया। इसके पश्चात द्विजों ने जयघोष किया। वैदिक युग के पश्चात और मनु के पूर्व जन-प्रतिनिधियों का एक वर्ग होता था, जिन्हे रत्नी कहा जाता था। राजा के राज्यारोहण के समय ये विशेष भूमिका निभाते थे। उन्हें रत्नी इसलिए कहा जाता था कि उनके पास रत्न होते थे, जो प्रभुता का प्रतीक होता था। राजा को प्रभुता तभी प्राप्त होती थी, जब रत्नीगण उसे सत्ता के प्रतीक होने के उपरांत प्रत्येक रत्नी के घर जाता था और उसे उपहार देता था। महत्वपूर्ण बात यह है कि शूद्र भी एक रत्नी था। प्राचीन समय में शूद्र दो महत्वपूर्ण राजनीतिक संस्थाओं के सदस्य हुआ करते

शूद्र आर्य थे, जिन्हें जनपद और पौर कहा जाता था, और वे इन संस्थाओं के सदस्य होने के कारण ब्राह्मण तक से विशेष सम्मान के अधिकरी होते थे।

यह निर्विवाद सत्य है कि प्राचीन आर्य समाज में शूद्रो ने उच्च राजनीतिक गौरव प्राप्त किया था। वे राज्य के मंत्री बन सकते थे। महाभारत में इसका प्रमाण मिलता हैं। महाभारतकार अपनी स्मृति के आधार पर 37 मंत्रियों की एक सूची का उल्लेख करता हैं, उसमें चार मंत्री ब्राह्मण, आठ मंत्री क्षत्रिय, इक्कीस मंत्री वैश्य और तीन मंत्री शूद्र तथा एक मंत्री सूत था।

शूद्रो ने आपनी प्रगति राज्य में मंत्री बन जाने तक ही सीमित नहीं रखी, वे राजा भी बने। कोई शूद्र राजा बन सकता है या नहीं, इस बारे में मनु ने जो धारण व्यक्त की है, वह शूद्रों के विषय में ऋग्वेद में वर्णित कथा के एकदम विपरीत है। सुदास के शासन की जब कभी चर्चा की जाती है, वशिष्ट औ विश्वामित्र के बीच इस बात के लिए उनमें से कौन उसका राजपुरोहित बनेगा। यह विवाद इस बात को लेकर उठा कि किसे पुरोहित या राजा बनने का अधिकार है। कि किसे पुरोहित या राजा बनने का अधिकार है। वशिष्ठ ने, जो ब्राह्मण थे, और जो पहले से ही सूदास के पुरोहित केवल ब्राह्मण हो सकता है, जबकि विश्वमित्र ने जो एक क्षत्रिय थे, यहा कहा कि इस पद पर क्षत्रिय का अधिकार है। विश्वामित्र अपने उद्देश में सफल हुए और सुदास के पुरोहित बन गए। यह विवाद निस्संदेह स्मरणीय है क्योंकि इसका संबंध एक ऐसे प्रश्न से है जो बहुत ही महत्वपूर्ण है। हालांकि इसके परिणाम स्वरूप ब्राह्मण स्थाई रूप से राज-पुरोहित के पद से वंचित नहीं किये जा सके, किन्तु इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह घटना सामाजिक इतिहास की शायद एक महत्वपूर्ण

घटना है जो हमें प्राचीन ग्रंथों में मिलती है। दुर्भाग्य से इस बात की ओर किसी का ध्यान नहीं गया, न ही किसी ने यह गंभीरतापूर्वक सोचा कि वह राजा कौन था ?सुदास पैजवन का पुत्र था और पैजवन दिवोदास का पुत्र था, जो काशी का राजा था। सुदास का वर्ण क्या था? अगर लोगों को यह बताया जाए कि सुदास नामक राजा एक शूद्र था तो बहुत कम लोंगों को विश्वास होगा। किन्तु यह एक यथाथ है और इसका प्रमाण महाभारत में उपलब्ध है जहां शान्ति पर्व में पैजवन का प्रसंग आया है। वहां यह कहा गया है कि पैजवन एक शूद्र था। यहां सुदास की कथा से आर्यो के समाज में शूद्रों की स्थिति के बारे में नई रोशनी मिलती है। इससे पता चलता है कि ब्राह्मण और क्षत्रिय एक शूद्र राजा के अधीन कार्य करने में किसी अपमान का अनुभव नहीं करते थे, बल्कि उनमें राजा का अनुग्रह प्राप्त करने के लिए परस्पर प्रतिस्पर्धा थी और उसके यहां वैदिक कर्म करने के लिए तैयार रहते थे।

यह नहीं कहा जा सकता कि बाद के युग में कोई शूद्र नहीं हुआ। बल्कि इसके विपरीत ऐसे प्रमाण मिलते है कि मनु के पूर्व शूद्र राजाओं के दो साम्राज्य थे। नंदों ने, जो शूद्र थे, ईसा पूर्व 413 से ईसा पूर्व 322 शताब्दी तक राज्य किया। इसके पश्चात् मौर्य, जिन्होंने ईसा पूर्व 322 से ईसा पूर्व 183 शताब्दी तक शासन कियाः वे भी शूद्र थे। इस बात को सिद्ध करने के लिए कि शूद्रों ने कितना ऊंचा स्थान प्राप्त किया अशोक के दृष्टांत से बढ कर क्या दृष्टांत हो सकता है जो भारत का सम्राट ही नहीं था, बल्कि वह शूद्र भी था और उसका साम्राज्य वह साम्राज्य था जिसे शूद्रो ने बनाया था।

वेदों का अध्ययन करने के बारे में शूद्रो के अधिकारों के प्रश्न पर छांदोग्य उपनिषद उल्लेखनीय है। इसमें जानश्रुति नाम का एक व्यक्ति की कथा आती है, जिसे वेद-विद्या का ज्ञान रैक्व नाम आचार्य ने दिया था। वह व्यक्ति एक शूद्र था। यदि यह एक सत्य कथा है तो इसमें कोई संदेह नही रह जाता कि एक समय ऐसा भी था, जब अध्ययन के संबंध में शूद्रो पर कोई प्रतिबंध नहीं था।

केवल यही बात नहीं थी कि शूद्र वेदों का अध्ययन कर सकते थे। कुछ ऐसे शुद्र भी थे, जिन्हे ऋषि-पद प्राप्त था और जिन्होंने वेद मंत्रों की रचना की। कवष एलूष नामक ऋषि की कथा बहुत ही महत्वपूर्ण है। वह एक ऋषि था और ऋग्वेद के दसवें मंडल में उसके रचे हुए अनेक मंत्र है। वैदिक कर्म में और यज्ञादि करने के बारे में शूद्रों की आध्यात्मिक क्षमता के प्रश्न पर जो सामग्री मिलती है, वह निम्नलिखित है। पूर्व मीमांस के प्रणेता जैमिनि ने बदरी नामक एक प्राचीन आचार्य का उल्लेख किया है, जिनकी कृति अनुपलब्ध है यह इस मत के व्याख्यात थे कि शूद्र भी वैदिक यज्ञ करा सकते है। भारद्वाज श्रौत सूत (5. 28) में स्वीकार किया गया है कि विद्वानों का एक ऐसा वर्ग भी है जो वैदिक यज्ञ के लिए आवश्यक तीन पवित्र अग्नियों को उत्पन्न कर सकता है। कात्यायन श्रौत सूत्र (1 और 5) का भाष्यकार यह स्वीकार करता है कि कुछ वैदिक ऋचायें ऐसी है, जिनसे यह निष्कर्ष निकलता है कि शूद्र वैदिक कर्म करने के योग्य हैं। शतपथ ब्राह्मण (1.1.4.12) में आचार विषयक एक नियम का उल्लेख है, जिसका आचरण यज्ञ कराने वाले ब्राह्मण को करना होता था। यह उस विधि के संबंध में है जिसके अनुसार पुरोहित को हविष्कू (यज्ञ कराने वाल व्यक्ति) को संबोधित करना चाहिए। यह नियम इस प्रकार है एहि (यहां आओ) यह ब्राह्मणों के लिए कहा गया है। आगहि (आगे बढ़े) यह वैश्यों के लिए है। आद्रव (जल्दी आओ) यह राजन्य (क्षत्रिय) के संबंध में है और आधाव (भाग कर) आओ, यह शूद्र के लिए है।

शतपथ ब्राह्मण में ऐसा प्रमाण मिलता है कि शूद्र सोम यज्ञ करा सकता था और देवताओं का पेय सोम ग्रहण कर सकता था। इसमें कहा गया है कि सोम यज्ञ में पयोव्रत (केवल दुग्ध पान करने का व्रत) के स्थान पर शूद्र के लिए मस्तु (दही का पानी) निर्धारित था। एक अन्य स्थान पर शतपथ ब्राह्मण कहता है।

चार वर्ण हैः ब्राह्मण, राजन्य, वैश्य और शूद्र। इसमें से कोई भी ऐसा नहीं जो सोम का तिरस्कार करता हो। यदि उनमें से कोई ऐसा करता है तो उसे प्रायश्चित करना होगा।

इससे पता चलता है कि शूद्रों के लिए सोमपान करने की अनुमति ही नहीं थी, वरन् यह शूद्र सहित सभी के लिए अनिवार्य था परन्तु अश्विनी कुमारों की कथा में इस बात का निश्चित प्रमाण मिलता है कि शूद्र को दैवी सोम के पान करने का अधिकार था

– गणेश येरेकर
मराठवाडा सचिव,
(नसोवासवायएफ)
नांदेड, महाराष्ट्र
मो. 09975461867

+++

नॅशनल एस.सी.एस.टी.ओबीसी स्टुडेन्ट एण्ड युथ फ्रन्ट (नसोसवायएफ) की अरोहली (गुजरात) में बैठक सम्पन्न हुई

नॅशनल एस.सी.एस.टी. ओबीसी स्टुडेन्ट एण्ड यूथ फ्रन्ट (नसोसवायएफ) के गुजरात जिला अरोहली के मोडासा में गुजरात प्रदेश स्तर की बैठक का अयोजन किया गया था। इस बैठक में मुख्य अतिथी नसोसवायएफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष डी. हर्षवर्धन जी थे।

डी. हर्षवर्धन जी ने सम्बोधिन करते हुए नसोसवायएफ के उद्देश के बारे में अपनी बात रखी और भारतीय शिक्षा व्यवस्था की उन्होने आलोचना करते हुए कहा की, यह शिक्षा व्यवस्था सभी को समान एवं एक दर्जा की प्रदान नही की जा रही हैं। इससे विषमतावादी समाज का ही निर्मान हो रहा है। 68 साल की यह शिक्षा व्यवस्था देश में सामाजिक परिर्वतन लाने में असफल रहो हैं विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय में सामाजिक परिवर्तन लाने वाले विचारों के पाठ्यक्रम पठाए नही जाते। नही विद्यालया में छात्रो के ऊपर समतावादी विचार धाराओं के संस्कार किए जाते हैं।

छात्रो को धर्म निरपेक्ष जाति विहीन, स्त्री-पुरुष समानता प्रदान करने वाली शिक्षा न शिक्षक पढा रहे हैं। पाठ्रुक्रम इस तरह नही बनाए गये हैं। डी. हर्षवर्धन ने आगे कहा कि भारतीय स्कुलों का पाठ्यक्रम देशभर में अलग-अलग हैं। इसी तरह गरीब दलित-आदिवासी और आल्पसंख्यांको के लिए अच्छी शिक्षा व्यवस्था की जरूरत हैं मगर इनकों ही सरकारी स्कूलो के दर्जाहीत शिक्षण व्यवस्था प्रदान की जाती हैं। तो दूसरी तरफ सर्वण और अमीर छात्रो के लिए निजी स्कूलोद्वारा अच्छा और तकनीकी शिक्षा

भारत की 68 साल के शिक्षा व्यवस्था सामाजिक परिवर्तन लाने असफल रही
-डी. हर्षवर्धन

प्रदान की जाती है।

जिनके लिए शिक्षा एक मात्र सामाजिक और आर्थिक विकास का माध्यम हैं। उनके लिए शिक्षा के बराबर प्रदान की जाती है, इससे गरीब और गरीब बनता जा रहा है। अमीर और अमीर बतना जा रहा हैं। यह विषमतावादी समाज व्यवस्था का निर्माण हमारी शिक्षा व्यवस्था सदियों से कर रही है।

नसोसवायएफ देश में शैक्षणिक परिवर्तन लाने के लिए एक बड़ा आदोलन है, और इसके जारिए ही हम देश में सम्यक क्रांति ला सकते है। इस वक्त डी. हर्षवर्धन जी ने डॉ. उदित राज जी के दलित आदिवासी के लिए सामजिक न्याय के आंदोलन के में बताया और नसोसवायएफ का गुजरात में बढ़ाने के लिए नसोसवायएफ कें सदस्यों को अपील की।

इस कार्यक्रम का अयोजन रंजीत परमार और अनन्द परमार जी ने किया था। इस मिटिंग में प्रकाश वनकर को राज्य समन्वयक का पद डी. हर्षवर्धन द्वारा प्रदान किया गया है।

Join NSOSYF
NATIONAL SC,ST,OBC STUDENT & YOUTH FRONT
सम्यक क्रांति हमारा संकल्प

डी. हर्षवर्धन राष्ट्रीय अध्यक्ष मो. 07709975562
प्रताप सिंह अहिरवार राष्ट्रीय समन्वयक मो. 09630511720
गुजरात राज्य से जुड़ने के लिए इस पर संपर्क करे
प्रकाश वणकर गुजरात राज्य समन्वयक मो. 09974686530
रंजित परमार मो. 09825906463

मध्य प्रदेश परिसंघ द्वारा डॉ. अम्बेडकर एवं भगवान बुद्ध की जयंती मनाई गई

10 मई, अनुसूचित जाति/जन जाति संगठनो का अखिल भारतीय परिसंघ के नेशनल चैयमन डॉ. उदित राज जी मुख्य अतिथि थे। शुजालपुर (म.प्र) में परिसंघ से जुड़े सभी एस.सी. /एस.टी व दलित समाज के सदस्यो का हार्दिक अभिन्दन किया और सभा को सबोधित किया चैयरमैन डॉ. उदित राज ने अपने सम्बोधन मे बताया कि डॉ. अम्बेडकर ने सभी धर्मो को छोड़कर बौद्ध धर्म को अपनाया क्योकि बौद्ध धर्म विवेक बुद्धि का विकास मार्ग दिखलाता है और अच्छे व बुरे कर्मो की पहचान करता हैं। बौद्ध धर्म आज विश्व के कोने में सभी सुदृढ व विकासशील देशो में अपनाया गया हैं। जो भगवान बुद्ध की प्रेरणा , बौध्द धर्म के द्वारा बुद्धि विकास का रास्ता दिखाया गया हैं। जिसकी वजह से आज संसार के तमाम विकासित व शिक्षित देशो ने बौद्ध धर्म अपनाया हैं। यह धर्म डॉ. उदित राज ने भी अपनाया और दलित समाज को इस धर्म पर चलने की प्रेरणा दी और इसके तहत दलित समाज को ऊपर उठाने का बीड़ा उठाया जिसका प्रचार हम देश की सभी सभाओं में करते है।

डॉ. उदित राज सांसद, लोक सभा ने डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर के विचारों पर चलने के लिए सभी समाज के लोगों को सम्बोधित किया। क्योंकि आज डॉ. अम्बेडकर ने अगर दलित समाज को अधिकार नही दिलाया होता तो दलित समाज करीब 100 वर्ष पिछे होता और सभी धर्म के लोग आज भी हम पर राज करते तथा गुलामी की बेड़ियों मे बंधे हुए होते। यह एकमात्र बाबा साहेब अम्बेडकर की

मंच पर रा. अध्यक्ष डॉ. उदित राज, आर.एस. हंस, किशोरी लाल बकोदिया और अन्य परिसंघ के पदाधिकारी

देन है। जो कि संविधान में दलित समाज को आरक्षण दिया अन्यथा यह समाज सैकड़ो साल दास बना कर रखता।

डॉ. उदित राज ने हमे एक वाक्य बताया कि बाबा साहेब जब संविधान लिख रहे थे तो रात में 2 बज गए तभी तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने कहा बाबासाहेब अब सो जाएं रात बहुत हो चुकी हैं। बाबा साहेब ने प्रधानमंत्री को उसी वक्त जवाब दिया मेरा समाज जगा हुआ हैं। जिसे कभी चौन कि नींद का पता ही नही हैं। तो मैं कैसे सो सकता हुं और फिर अपना संविधान लिखना शुरू कर दिया।

मध्य प्रदेश में परिसंघ के बैनर के नीचे आए हुए सभी साथियों से अनुरोध किया कि हमे अपनी लड़ाई खुद लड़नी चाहिए। और एकजुट होकर परिसंघ की सदस्यता ग्रहण करनी चाहिए। अन्यथा हमारा समाज अलग-अलग भागों में बंटा रहेगा और दूसरे लोग दलित समाज का हमेशा शोषण करते रहेंगे और करते रहे हैं।

डॉ. उदित राज ने सभा संम्पन्न होने के बाद अधिकारियों व कर्मचारियों से जुड़ी समस्याओं की अदालत लगाई ओर उनकी सभी समस्याओं को ध्यानपूर्वक सुना। साथ गए मध्यप्रदेश प्रभारी श्री. आर.एस.हंस को निर्देश दिए कि तुरन्त आधार पर आवश्यक कार्यवाही करके वहां के अधिकारियों व कर्मचारियों की समस्याओं को निपटाये व परिसंघ से जुड़े सभी लोगों की समस्यों को सुनवाई की गई। उसी समय मध्यप्रदेश प्रभारी श्री आर. एस. हंस जी ने एक एक करके परिसंघ के सदस्यों से मुलाकात कर समस्यायें सूनी और ज्यादातर समस्यायें मध्यप्रदेश शासन के बारे में बताई गई जो दलित समाज व उनसे जुड़ी समस्याओं को अनदेखा किया जा रहा है। तथा कोई प्रशासन में सुनवाई नही हो पा रही हैं। दलित समाज बड़ा दुखी व अपने आप को असुरक्षित महसूस कर रहा हैं। इस के बाद हंस जी कहा की कार्यक्रम को आयोजित करने वाली परिसंघ के कार्यकारिणी सदस्य माननीय जिलाध्यक्ष श्री किशोरीलाल बकोदिया व हरिचरण गवाटिया तथ कैलाशचन्द्र राजोरिया और माननीय अतिथि पधारे हुए श्री भारती जी व डॉ. सुर्यवंशी और परिसंघ के सदस्यों व दलित समाज के जिन लोगों ने यह सभा अयोजित की मैं उनका हार्दिक दिल से डॉ. उदित राज जी कि ओर से व अपनी तरफ से अभिन्दन करता हूँ। ये विनंती करता हूं। कि संघर्ष की लड़ाई में सहयोगी बनने के लिए परिसंघ के सदस्य अवश्य बने और हमारे हाथ मजबूत करे।

–श्री. आर. एस. हंस
मध्यप्रदेश प्रभारी

+++

महाराष्ट्र परिसंघ द्वारा बुद्ध जयंती मनाई गई

2 मई, को नागपुर में अनुसूचित जाति /जन जाति संगठनो का अखिल भारतीय परिसंघ का महाराष्ट्र के नागपुर जिला में ऑफिस का उद्घाटन चैयरमैन डॉ. उदित राज जी ने किया जिस की पूर्ण रूप से जिम्मेदारी महाराष्ट्र सचिव कुमारी अर्चना (रेशम) भोयर को सौपी गई।

डॉ. उदित राज नें नागपुर के सभी एस.एस./एस.टी एवं सभी दलित समाज के लोगों को सम्बोधित किया। बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर एवं तथागत बुध्द जयंती संपूर्ण देश में मनाई गई। डॉ. उदित राज ने कहा कि डॉ. अम्बेडकर के विचारो नें सभी दलित समाज को एक रास्ता दिखाया उसी वजह से ही हम सभी की जिन्दगी में परिर्वतन आया। यदि बाबा साहेब ने संघर्ष नही किया होता तो दलितों को शासन एवं प्रशासन में कोई भी भागीदारी नही होती ही दलितों को आरक्षण का लाभ मिलता। आरक्षण की वजह से ही मैं कमिंसर बना तथा कुछ लोग पंचयात, असेंबली या पालियामेंट में पहुचे।

डॉ. उदित राज ने संम्बोधन में यह बताया की सभी दलितों को एक होकर अनुसूचित जाति / जन जाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ के बैनर के नीचे काम करना चाहिए और संगठित होकर आगे की रूपरेखा में अपनी बड़ी भूमिका निभानी चाहिए। डॉ. उदित राज जी ने बहन मायावती जी के उस आरोप का भी खडंन किया

महाराष्ट्र परिसंघ के प्रभारी दयाराम एवं अर्चाना भोयर डॉ. उदित राज एवं सीमा राज जी का सम्मान करते हुए

जो यही कहती है की डॉ. उदित राज जी दलितों और मेरे विरोधी हैं। क्योंकि मुझे हरवाने के लिए ही मेरे दलित भाई, बहन के वोट काटते हैं। डॉ. उदित राज जी ने कहा की यदि मैं दलित में विरोधी होता तो दिल्ली में दलितों का 16% वोट बहन मायावती था जो गिर गिरकर 6% रह गया है। वो सारा दलित वोट दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल क्यों मिला मुझे क्यो नही मिला। यह तत्य इस बात को साबित करते है कि बहन मायावती जी गलत है, मैं दलित विरोधी नही हूँ मैं तो दलितों के उत्थान के लिए अपनी नौकरी तक छोड़ कर दलित समाज के कार्य में लगा हूँ।

महाराष्ट्र के प्रभारी एवं दिल्ली एस.एसी./एस.टी संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ के संगठन सचिव दयाराम जी ने अपने सम्बोधन में कहा की देश की आज़ादी के बाद दलित समाज को अब तक जितने भी अधिकार प्राप्त हुए हैं वे सभी डॉ. अम्बेडकर एवं दलित महापुरुषों के बतायो रास्तों पर चल कर एवं संघर्ष करने से प्राप्त हुए है।

सन 1997 में डी.ओ.पी.टी द्वारा आरक्षण विरोधी अध्यादेश पारित हुए जिससे दलित समाज में एक निराशा का दौर शुरू हो गया इस अध्यादेश को वापास लेने के लिए सन 1997 में ही डॉ. उदित राज जी ने सभी विभागों के कर्मचारियों, अधिकारियों को इकट्ठा करके डॉ. भीमराव अम्बेडकर के सुझाये हुए रास्ते पर चलकर आन्दोलन शुरू किया इसे पहले देश के कर्मचारी, अधिकारी अपनी माँगो को मनवाने के लिए बन्द कमरे में सेमिनार करके किसी दलित नेता या प्रभावशील नेता को बुलाकर पहले उसका स्वागत करते थे फिर आपनी माँग रखते थे।

लेकिन डॉ. उदित राज जी ने ऐसा नही किया। डॉ. उदित राज जी ने डॉ. अम्बेडकर के अन्दोलन को बहुत अच्छे तरिके से समझा और उसी रास्ते पर चलकर कर्मचारियों एवं अधिकारियों को उनके अधिकारों के लिए सड़को पर उतरना शुरू कर दिया। इस तरह से परिसंघ का भी आन्दोलन पूरे देश में फैल गया। 11 दिसंबर 2000 कि रैली का परिणाम सामने आया, उस रैली से प्रभावित होकर तत्कालीन माननीय प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने 2001 मे 81 वॉ, 82 एवं 85 वॉ सवैधानिक संशोधन किया जिसके कारण हमरा आरक्षण काफी हद तक सुरक्षित रहा श्री दयाराम जी आगे कहा कि महाराष्ट्र के सभी कर्मचारियों, अधिकारियों एवं दलित समाज के संभी लोगों से अपिल की है कि डॉ. उदित राज के हाथ मजबूत करें तथा जो डॉ. उदित राज जी के द्वारा 10 लाख लोगों का सदस्यता अभियान जो सारे देश में चलया जा रहा है। उसे पूरा करे। बुध्द जंयती के अवसर पर आपको यह आश्वासन दिलाना चाहूँगा यदि जल्द ही हमारा 10 लाख लोगों की सदस्यता अभियान पूरा हो जाता है। तो वो दिन दूर नही कि डॉ. उदित राज जी देश के प्रधानमंत्री होंगे।

प्यारे साथियों मैं अन्त में कुमारी आर्चना भोयर का अति दिल से अभिन्दन करता हूँ। कुमारी आर्चना जी ने बड़े ही अच्छे तरीके से उचित प्रबन्ध किया। इसके साथ भी मैं नॅशनल एस.सी. एस.टी. ओबीसी. स्टूडेंड एण्ड यूथ फ्रन्ट के राष्ट्रीय अध्यक्ष डी. हर्षवर्धन जी का भी अभिन्दन करता हूं तथा महाराष्ट्र के अध्यक्ष श्री सिध्दार्थ भोजने जी की देख-रेख में कार्याक्रम संपन्न हुआ।

– दयाराम
संगठन सचिव
अखिल भारतीय परिसंघ, दिल्ली

+++

लखनऊ में प्रदेश महा सम्मेलन सम्पन्न

अपनी मांगे मनवाने के लिए दिसम्बर 2015 में बड़ी रैली करने का ऐलान। संगठन को और संघर्ष शील बनाने के लिए श्री जगजीवन प्रसाद को प्रदेश अध्यक्ष, श्री धर्म सिंह को प्रधान महासचिव एवं श्री केदार नाथ को महासचिव बनाया गया।

लखऊन में 17 मई, 2015 को आयोजित प्रोग्राम में परिसंघ के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता 16 मई, 2015 से लखनऊ पहुचना शुरू हो गये थे। और 17 मई,2015 को कुछ वरिष्ठ साथी अपने चैयरमैन एवं दिल्ली से लोक सभा सदस्य डॉ. उदित राज जी का लखनऊ पहुँचने पर चौधरी चरण सिंह हवाई अड्डा, लखनऊ में उनकी अगवानी कर फूल मालाओं से स्वागत किया, और माल एवन्यू स्थित लखनऊ के अति विशिष्ट अतिथिगृह तक उनको पहुँचाकर सभा स्थल पर पहुंच गये।

दोपहर 12:30 बजे तक पूरा गांधी भवन प्रेक्षागृह खचा-खच भर गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. उदित राज जी के कार्यक्रम में पहुंचने तक अनौपचारिक सभा/ भाषण चलता रहा और आधे घंटे में ही डॉ. उदित राज जी सभा कक्ष में उपस्थित हो गये, और डॉ. उदित राज संघर्ष करो हम तुम्हारे साथ है। हमारा नेता कैसा हो डॉ. उदित राज जैसा हो, डॉ. अम्बेडकर अमर रहे, डॉ. उदित राज जिन्दाबाद-जिन्दाबाद, के नारो के साथ संगठन के प्रधान महासचिव/ मंच संचालक श्री धर्म सिंह जी ने मुख्य अतिथि डॉ. उदित राज जी को भगवान बुध्द की प्रतिभा पर पुष्प अर्पित कर एवं डॉ. अम्बेडकर की प्रतिमा पर मालार्पण कराकर कार्यक्रम का उद्घाटन कराया।

मंच पर डॉ. उदित राज जी को सम्मान सहित बैठाने के बाद उनका स्वागत - अभिनन्दन शुरु हुआ, सबसे पहले 20-25 किलो की बड़ी माला श्री जगजीन प्रसाद, श्री धर्म सिंह, श्री महावीर सिंह, श्री केदार नाथ एवं श्री राज कुमार गौतम ने पहनाई और एक-एक कर कई साथियों ने उसी माला में अपना भी सिर डालकर फोटो खिचवाते रहे। इसके बाद छोटी मालाओं से स्वागत का शिलशिला शुरु हो गया जो एक-एक कर के लगभग सभी प्रमुख पदाधिकरियों को मंच पर बुलाकर डॉ. उदित राज जी का स्वागत कराया गया और उन्हे मंच पर डॉ. उदित राज जी के साथ बैठाया गया। कार्यक्रम में आई सभी महिलाओं से भी डॉ. उदित राज जी का स्वागत कराया गया।

मई महीने की तपती हुई गर्मी में डॉ. उदित राज जी को सुनने के लिए पूरे उत्तर प्रदेश के कोने-कोने से परिसंघ के पदाधिकारी एवं कार्यक्रर्ता महासम्मेलन में पहुंचे जिनमें प्रमुख रूप से श्री राज कुमार, ताराचत चौधरी, राजेश कुमार गौतम, सतीश कुमार, नथूलाल, नीलम देवी सहित भारी संख्या में बरेली से आए श्री महावीर सिंह, आर.पी.सिंह, सुरेन्द्र सिंह, वेद प्रकाश जी भी अन्य साथियों सहित विजनौर से, श्री सोमनाथ सरोज, भानू प्रकाश, महेन्द्र सरोज, विशाल कश्यप, इन्दुमणि, विरेन्द्र जी, मीरा सोनकर, विमलादेवी सहित, रामू प्रसाद जी के साथ भारी संख्या में लोग इलाहाबाद से आये, श्री अमित राज, शिवशंकर, लाल विहारी, नेरश राज, श्रीमती चन्द्रावती, नसीर, विवके, सहित बड़ी संख्या में हरदोई से पहुंचे, अशोक कुमार, फुलचन्द्र, मुकुन्दानन्द सुल्तानपुर से आये, श्री राधेश्याम, आर. के. कमल, नीरज कुमार चक, विशभ्भर नाथ, दर्शन लाल, अंकित चक, प्रिन्सदीप सिंह, जय प्रकाश, प्रियांशू गौतम, नितिन शर्मा, अजय कुमार, सोनू त्यागी, सहित बड़ी संख्या में औरइया से आये के.पी. सिंह जी मेरठ से श्री केदार नाथ, निर्देश सिंह सहित भारी संख्या में लोग मुरादाबाद से कार्यक्रम में समलित हुऐ श्री, प्रतासिंह, राम गौतम, राजेश कुमार गौतम, सेवाराम दिवाकर, दलवीर सिंह, हज्जू सिंह, कमलेश, प्रतापसिंह, श्री राम गौतम, राजेश कुमार गौतम, सेवाराम चन्दौसी (संभल) से कार्यक्रम में आये। राज कुमार गौतम संतोष कुमार अपने साथियों सहित हापुड से आये। श्री नाथ संजय, राजेश कुमार ध्रुव, राज विवेक राजवंश प्रतापगढ से आये, के.पी. सिंह एवं महेश कुमार सहित तमाम लोग इस कार्यक्रम में शामिल हुए।

उत्तर प्रदेश परिसंघ द्वारा डॉ. उदित राज जी का सम्मान करते हुए जगजीवन प्रसाद एवं अन्य पदाधिकारी

कार्यक्रम में लोगों ने आर्थिक सहयोग भी दिया जिनमें श्री राज कुमार गौतम - 10,000/- दाताराम - 5000/-, आर. पी. गौतम -2000/-, के.पी. सिंह - 5000/-, अमित राज -5000/-, सोमनाथ सरोज - 2000/-, मानू प्रकाश - 2000/-, आर.ए . सिंह-1500/-, महेन्द्र कुमार गौतम - 5000/-, के. सी राजोरा -5000/-, राज कुमार - 5000/-, तारा चन्द्र चौधरी -1000/-, सुरेन्द्र कुमार सोनकर -1000/-, लखपत सिंह -2000/-, प्रकाश सिंह -1000/-, विकास मोगा-3000/-, महेश कुमार कनौजिया-1000/-, रामलखन कोटार -1000/-, निर्मल भार्गव-1000/-, सेवाराम दिवाकर -1000/-, महावीर सिंह -5000/-, आर.के. कमल-5000/-, धर्म सिंह-5000/-, फूलचन्द्र चौधरी -2000/-, और अभी बरेली से श्री राज कुमार जी 25000/-, श्री के. पी. सिंह -5000/-, कुलचन्द्र चौधरी 3000/- और देंगे।

जब सभा को सम्बोधित करने का अवसर आया तो लगभग 25-30 प्रमुख पदाधिकारियों के नाम आ गये हमारे परिसंघ के अनुभवी पदाधिरियों को तो अपने-अपने विचार रखने के लिए मना कर दिया। लेकिन जो लोग 200, 100 या 50 लोगों के साथ आये थे उनको तो मंच पर अपने विचार रखने के लिए अमंत्रित किया गया क्योकि यदि उनको बोलने का मौका न देने पर उनके साथ आये लोगों पर उनके उत्साह में कभी आसकती थी। सभी वक्तोओं ने कहा कि डॉ. उदित राज के नेतृत्व में ही संविधान संशोधन के माध्यम से पदोन्नति में आरक्षण लागू होगा क्योकि आज तक किसी संगठन या राजनैतिक दल के दबाव मे दलितों के हित में कोई संविधान संशोधन नही हुआ और यदि हुआ भी तो परिसंघ के आन्दोलन के दबाव में संसद ने 81 वाँ, 82 वाँ एवं 85 वाँ संविधान संशोधन तत्कालीन प्रधानमंत्री माननीय अटलबिहारी बाजपेयी की ही सरकार ने किया था। डॉ. उदित राज के साथ आये ग्रामीन बैंक के चेयरमैन श्री के. आर. कनौजिया एवं दिल्ली परिसंघ के महासिचव श्री रविन्द्र सिंह एवं नसोसवायएफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष डी. हर्षवर्धन ने भी अपने विचार रखे और विस्तार से डॉ. उदित राज के विचार सुनने की इच्छा जाहिर की। कार्यक्रम में आयोजक श्री जगजीवन प्रसाद एवं धर्म सिंह ने भी अपने विचार रखे धर्म सिंह ने कहा कि डॉ. उदित राज जी को भारत ही नही बाहर के देशों के लोग भी इनकी कम तरता एवं संघर्ष क्षमता को जानते हैं। उन्होने आश्चर्य जताया कि पता नहीं क्यों उत्तर प्रदेश का दलित कर्मचारी हमारे आरक्षण के मुद्दो पर गम्भीरता नहीं दिखा रहा और यदि यही हाल रहा तो जिस चतुराई से न्यायालय द्वारा उत्तर प्रदेश में पदोन्नति में आरक्षण समाप्त कर दिया और यदि हम इसी तरह सोते रहे तो भर्ती में भी आरक्षण समाप्त हो सकता हैं। उन्होने दिसम्बर 2015 में प्रस्तावित महारैली में लाखों लोगों के साथ लखनऊ आने का निमंत्रण दिया इस के बाद सभा के आयोजक परिसंघ के राष्ट्रीय समन्वयक श्री जगजीन प्रसाद ने कहा कि अगला संविधान संशोधन डॉ. उदित राज जी के ही नेतृत्व में जारी जन आन्दोलन से ही होगा, उन्होने कहा कि दिसम्बर 2015 में प्रस्ताविक परिसंघ की महारैली में परिसंघ के सभी राष्ट्रीय एवं प्रान्तीय नेताओं को भी लखनऊ में आमंत्रित किया जाएगा और उत्तर प्रदेश राज्य के सभी अनुसूचित जाति/जनजाति संगठनो के प्रतिनिधियों सहित जिलो से गाँव-गाँव तक जागरूक समाजसेवी साथियों का सहयोग लेगे। और ऐसी स्थिति पैदा करेगें कि भविष्य में आरक्षण में छेड-छाड करने की कोई कोशिश न करें। उन्होने आगे बताया कि वे 31 जुलाई 2015 को सरकारी सेवा से सेवावृत्ति हो रहे हैं और इसके बाद वे लगातार/ प्रतिदिन परिसंघ के कार्यालय में बैठेंगे और इस महारैली के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए पूरा समय देंगे। उन्होने बताया कि इस देश में कुत्ता-बिल्ली पशु-पक्षी, पेड-पौधों के लिए कानून बना है लेकिन आज तक आरक्षण कानून नही बना। वे बीच-बीच में प्रेक्षागृह में बैठे लोगों को यह याद दिलाते रहे कि सभी के लिए भोजन की व्यवस्था की गई हैं, मुख्य अतिथि के सम्बोधन के बाद सभा समाप्त होने पर भोजन करके घर वापस जाना। जब हमारे चेयरमैन डॉ. उदित राज हम सबको सम्बोधित करने के लिए खड़े हुए तो सभागार में बैठे लोगों में जोश आ गया और सभी नारे लगाने लगे तो उन्होने खुद कहा कि मुझे बोलने तो दो तब लोग शान्त हुए उन्होने परिसंघ के लम्बे आन्दोलन और उपलब्धियों का जिक्र करते हुए बताया कि ज्यों-ज्यों निजीकरण बढ़ता जा रहा है रोजगार-भागीदारी एवं दलितो का सम्मान कम होता जा रहा हैं दलितों, आदिवासियों की उन्नति का माध्यम सरकारी नौकरियों, शिक्षा एवं राजनीति में आरक्षण से ही सम्भव हुई है। सरकारी नौकरिया तेजी से घट रही है। उसका दुष्परिणाम न केवल रोजगार एवं भागीदारी पर पड़ रहा है बल्कि शिक्षा के प्रति, उदासीनता भी बढ रही हैं। जब से निजीकरण का दौर बढ़ा हैं। रोजगार घंटे हैं। अनुसूचित जाति/ जन जाति संगठनो का अखिल भारतीय परिसंघ की मांग है कि, निजी क्षेत्र में आरक्षण देकर इन वर्ग को नौकरियाँ दी जानी चाहिए किसी विशेष को शासन व प्रशासन से दूरस्थकर देश को मजबूत नहीं किया जा सकता। इन वर्गो के लिए आज भी चाहे मीडीया हो, व्यापार हो, उद्योग हो, आयात-निर्यात हो, पूजी, कला एवं संस्कृति, जमीन, शिक्षा का भी निजीकरण तेजी से हुआ और इस वर्ग पर प्रतिकूल असर पड़ा और गरीबों एवं महिलाए भी इससे वंचित है। अपने सम्बोधन के बीच ही उत्तर प्रदेश परिसंघ की भंग ईकाई को मजबूत एवं संघर्ष शील बनाने के लिए श्री जगजीवन प्रसाद को प्रदेश अध्यक्ष, श्री धर्म सिंह को उत्तर प्रदेश परिसंघ का प्रधान महासिचव एवं श्री केदार नाथ जी को प्रदेश महासचिव बनाने का प्रस्ताव रखा जो सर्व सम्मत से पास हो गया उन्होने श्री जगजीवन प्रसाद द्वारा आरक्षण कानून बनाने की बात का समर्थन करते हुए बताया कि यह मांग तो परिसंघ करता ही रहा है इस मुद्दे पर जोर देने की जरुरत हैं। डॉ. उदित राज जी का भाषण समाप्त होते ही लोग मंच पर चढ गये और श्री जगजीवन प्रसाद, श्री धर्म सिंह एवं श्री केदार नाथ को फूल-मालाओं से लाद दिया। डॉ. उदित राज जी ने प्रस्तावित महारैली में तन-मन-धन एवं जन से भारी जन समूह के साथ लखनऊ पहुँचने की अपील करते हुए अपना भाषण समाप्त किया और महासम्मेलन में आप सभी पदाधिकारियों सर्व कार्यकर्ताओं के साथ परिसंघ द्वारा आयोजित भोज में समलित हुए। डॉ. उदित राज जी भोजन करते समय भी सभी को प्रस्तावित महारैली को आज से ही सफल बनाने की बात करते रहे। भोजन के बाद बहुत से लोग डॉ. उदित राज जी के साथ लखनऊ के अतिविशिष्ट अतिथिगृह गये और उनसे दिशा- निर्देश लेकर अपने -अपने घर वापस चले गये।

- जगजीवन प्रसाद
प्रदेश अध्यक्ष

+++

Dr. Udit Raj, Member of Parliament inaugrated National Seminar On Dr. B R Ambedkar and Dr. Babu Jagjivan Ram's Orgaznied by CSIR-IICT, Hyerabad During 8th and 9th May, 2015.

National Seminar On Dr. B R Ambedkar, Dr. Babu Jagjivan Ram's views on Promoting Science & Technology and implementation of reservation policies was held on 8th-9th May 2015 at CSIR-Indian Institute Of Chemical Technology (IICT) Hyderabad, mainly to discuss and review the implementation of reservation policies in the CSIR system and also to look into the growth and development of country in a scientific perspective with respect to the views of aforesaid prominent personalities. Illustrious number of delegates, liaison officers of SC/ST associations of various CSIR institutions, notable speakers from diverse R&D sectors, educational institutions, distinguished scientists and members of the SC/ST association from the host institute attended the conference.

Smt. P.M.Kamalamma, Honorable Member, National Commission of Schedule Caste was the Guest of Honor and Dr. Udit Raj, National Chairman; All India Confederation of SC/ST Organizations & Honorable Member of Parliament (Lok Sabha) was the Chief Guest.

The seminar started on a traditional note; inviting the dignitaries on to the dais, bouquets presentation, playing the CSIR song, welcoming the delegates, formal inauguration of the conference by lighting the lamp, paying floral tributes to Dr. B.R.Ambedkar & Dr. Babu Jagjivan Ram followed by presentation on theme of the conference, address by Guest of Honor, Chief Guest, felicitations and finally the vote of thanks followed by technical sessions and interactive session of liaison officers with Guest of honor and the Chief Guest.

Dr. Ahmed Kamal, Director in-charge and outstanding scientist of CSIR-IICT gave the welcome address and presided over the programme. While welcoming the august audience, Dr. Kamal paid tributes to Dr.B.R.Ambedkar by commending him as a prolific student and completed all the courses with utmost sincerity at USA and UK. He also quoted that,

Dr. B.R.Ambedkar was responsible to come out with one of the best constitution we must all be proud of, and was associated with most of the prominent leaders of the country. Keeping all these things in mind, Dr. Kamal appealed the gathering to consider and admire Ambedkar as the role model and felt that it is a great tribute to him. Further, Dr. Kamal also paid tributes to Dr. Babu Jagjivan Ram by outlining his excellent career, ability to fight against all odds and his dream to become a Scientist. Furthermore, Dr.Kamal mentioned Dr. Babu Jagjivan Ram's understanding of science and holding science related portfolios and profuse management. Finally, Dr.Kamal extended heartfelt greetings to the delegates and wished for fruitful outcome.

Director in-charge CSIR-National Geophysical Research Institute (NGRI) also welcomed the gathering, greeted the audience after highlighting the prominent qualities of Dr. B R Ambedkar and Dr. Babu Jagjivan Ram. Subsequently, Mr. N. Ramesh, Convener of the seminar explained the theme of the conference as indicated in the preamble, circumstances that lead to conduct the conference, reminiscences the people behind this remarkable event and their valuable suggestions. He thanked all the participants for coming from all over the country to participate in this seminar and urged them to use this platform to exchanging ideas effectively and guide the growth and prosperity through this core sector. He placed on record the help extended by Scientists, Technical officers, members of the SC/ST association and other colleagues from CSIR-IICT. Finally he thanked one and all.

Later, Smt. P.M.Kamalamma, Honorable Member, National Commission of Schedule Caste opened her remarks by greeting the delegates of scientific fraternity who have come from across the country and mentioned her observation on vast change in life style of SC/ST communities in 125 years. Smt. Kamalamma portrayed Dr. B.R. Ambedkar as a great leader and philosopher who wrote the constitution. She said, before becoming the leader, Dr Ambedkar faced so many atrocities, sacrificed life and dedicated to downtrodden. Smt. Kamalamma opined, untouchability is not an external process. However, it is being practiced in different forms such as indirect discrimination and cautioned that commission is observing and taking note of all these things. She has strongly emphasized that SC/ST and BCs are not inferior to anyone. However, when they are reaching the top posts other communities are throwing mud and destroying their career. It is time for the commission to intervene actively and fight against the problem of downtrodden. These days all political parties observing the Ambedkarism and trying to help the downtrodden. Smt. Kamalamma felt that, if social development is there then only the country develops, otherwise no country develops.

National Seminar on Dr. B.R. Ambedkar & Dr. Babu Jagjiban Ram at CSIR-IICT Hyderbad 8 th 9 th May 2015

Smt. Kamalamma explained the introduction of POAT act (previously it was PCR) in the year 1989 against the atrocities and anybody commit the atrocity may be booked under this act. She assured that, commission is there to solve the problems in appointments, promotions and implementing rule of reservation and asked to fight for rights. She said that even Backward Classes and Minorities are following the Ambedkarism. About Dr. Babu Jagjivan Ram, Smt. Kamalamma said he was a great leader who has implemented the constitution and we have to put both the leaders in our hearts and follow their path. She congratulated the CSIR-IICT SC/ST Association for conducting the two day seminar to remember the views of two eminent leaders. Again she emphasized that, definitely as a commission member, I am with you, available to you, even our MP is also available and being from local area there is no language barrier. She asked the participants to interact, approach either by phone or in person.

Smt. Kamalamma closed her address by advising Heads of the Institutions to think about downtrodden, have good relation with them and address their grievances. They are no way inferior and asked to utilize their talent for institutional growth. Prior to her address, Dr. Narender Ravirala, Senior Principal Scientist and Liaison Officer CSIR-IICT introduced Smt. Kamalamma to the audience.

After the address of Smt. Kamalamma, Souvenir was released by Chief Guest and all other dignitaries on the dais. Next, Dr. B. Narsaiah, Head Fluoroorganics Division and Chief Scientist CSIR-IICT introduced the Chief Guest Dr. Udit Raj, National Chairman, All India Confederation of SC/ST Organizations & Honorable Member of Parliament (Loksabha) to august audience and requested him to address the gathering.

The speech of Dr. Udit Raj commenced by remembering Dr. B R Ambedkar, Dr. Babu Jagjivan Ram and said that few people become immortal because of their deeds, sacrifices and contribution to the growth of the nation and felt that these leaders comes into this category. He continued by mentioning, nowadays people listen to the speeches like a ritual and forgot. That is not the purpose of seminar. The very purpose of the seminar is to remind our duties. Many of us got the employment by availing the reservations and forgetting our duties. The main idea of

Dr. Ambedkar was, through reservations people should come into the mainstream and look after the community and the nation apart from family. However, most of us confining to our own interests. One must struggle for self interest, but one need to take out the time for society also. As long as they have no job, they compete for it. After securing the job, they complain for the employment related self interest. With this the very purpose of reservation is defeated. You need to pay back to the society. He asked gathering to think about it and left it to them. He stated that the very purpose of having reservation is not to enjoy for your personal benefit, but must contribute to the society. Then only the nation is proud. When we talk about the rights of deprived, women, not that we are talking only about their interests. But, interest of the nation also. Any nation cannot be happy and prosperous, well developed as long as participation of each community is not there in the government. He asked to look at the history. After Alexander up to 1947 India was always a slave of somebody or other. It never won a single battle. The reason being, one particular community was made responsible to fix and defend the boundaries; run the administration and govern the nation, society was fragmented into thousand groups and each group has assigned with a particular task like particular group to work with metal, some other group to work with pot making, to cut hair and shoe making. They were not concerned with the boundaries and security of the nation. They have not been involved. That is why the country was being defeated in the hands of the foreigners.

Dr Udit Raj said SC/ST and women and left over masses should become the part of administration and even reminded the presence you employees also should promote the national interest. He commented on CSIR also by stating that CSIR is promoting the national interests but its employees strength is going down which is affecting the SC/STs and also the nation. Dr Udit Raj also mentioned that privatization is not the panacea for this. In the private sector wealth is getting concentrated in some particular hands. With privatization, liberalization and globalization majority of the people getting marginalized and there is a big gap. Of course we can't compare with America. In America 90% of citizens have the access to basic commodities. They cannot forego that and we cannot afford here. In rural area, specifically tribal area, people survive with Rs 32/- per day. Whatever little bit of upliftment has done to these communities is also diluted with the downsizing employees strength and in the private sector we have hardly scope. Therefore, he asked the gathering to have concern about the reduction in size of the employee's number, otherwise future generation will suffer.

Dr Udit Raj told, India is the 10th largest economic country and the economic strength will be determined by the mindset of the people. Look at the Singapore, it started its journey in1950 and it is much ahead of us and building the capital of Andhra Pradesh. Japan launched fastest train

with 600KMs, Metro rail started in 1850 in England and Denmark digitalized everything and all its transactions are cashless. He asked, where we stand? When can we expect all these things? This is only possible with participation of all and opportunity for all.

On the Merit issue, Dr Udit Raj said, merit of upper castes is 5000 years old (their forefathers have contributed). Whereas, merit of SC/ST community only one or two generations old. Yet, if given opportunity, they can become equal in one generation. This was proven by the researchers in Chicago University that has appeared in the news item as impact of reservations in the Government sector. What is required is participation and opportunity for all. He gave an example where in 1833 British regiment was recruiting 44SDMs in Bengal and Bengal upper caste people demanded for their share as there was no opportunity for them to compete with the British. Hence, out of 44 posts 22 were given to Bengalis. That shows that, reservation is an opportunity. Dr. Udit Raj regretted that our education system has failed the nation n many ways. It has not taught about the cleanliness. He questioned, should Prime Minster involve teaching this?

Dr. Udit Raj also expressed the need of reservation in Judiciary. He said CJI has refused to implement the Parliament decision which is a supreme body to make and amend the laws and acts.

About the confederation, Dr. Udit Raj said, it has come to existence in the year 1997 and since then struggling to restore the reservation

OMs. All departmental associations should link with confederation. He said, employees need to play a greater role in strengthening the society when compared to MLAs, MPs and other public representatives. He said they are the temporary employees of their representing party and need to go away whenever it dislikes. Finally, he appealed to all the employees to join in the national drive of confederation and its movement to enroll 10 lakh members. He told that we got an opportunity to serve the nation which our forefathers didn't have. He closed by saying, if we can follow and practice the philosophy of Ambedkar, Phule and Sahu, we can definitely build a strong nation.

Lastly, inaugural function of the conference ended after felicitating the guests and proposing vote of thanks to take off the technical sessions. In the technical session, speakers elaborated the rule of reservation and its implementation apart from some scientific presentations related to health conditions of the SC/ST and other under developed communities with statistics. Prominent speakers like Prof. Goverdhan from JNTU Hyderabad made very good presentation on the importance of computers in the present and future context, and Dr. R.S. Praveen Kumar, IPS and Secretary Telangana Residential Educational Society has apprised the audience about how to motivate and inspire the children to become the future educationalists, industrialists, leaders and also to be best wherever they are. He stressed to inculcate the positive approach and fearless mind among children and emphasized to aware them with ancestral background and roots, so that they should not think that they have come from the different planet. Distinguished audience heard him with rapt attention. Finally, he appealed the scientists to visit the near around Social Welfare Schools, inspire the students with their experience, sensitize them towards science and help them to become future scientists.

Next day, valedictory function was held at which, various issues were highlighted by educationalists, social workers, administrators and public representatives. In conclusion, the conference resolved to rededicate to the duties, fight for rights, and take oath to pay back to the society in terms of monetary and intellectual assistance. In all aspects this seminar platform strengthened the morale of the scientists and other employees of SC/ST community across the CSIR laboratories.

- Maheshwar Raj

+++

CONFEDERATION OF SC/ST/OBC PROTESTS AGAINST RECRUITMENT POLICY

Jammu 09-05-2015 In a row against the new recruitment policy of Jammu and Kashmir Govt., the members of All India Confederation of SC/ST/ OBC Organizations joined by religious, political staged a protest here today at Press Club Jammu. The leaders of confederation termed this move of State Govt. as an attempt to deprive Scheduled Castes, Scheduled Tribes, Backward Classes and other reserved classes of their constitutionally guaranteed right of reservation in employment.

Addressing the protestors, R.K.Kalostra, State President of Confederation impressed upon Govt. to either roll back from the new recruitment policy or implement the provisions of SC/ST/OBC reservation therein Otherwise, the confederation will take this to the street and launch statewide agitation. He cautioned the State Govt that already all the Dist. units has protested against the decision of the Govt. and now in next phase the protest will go up to Tehsil and Block level and Confederation will not leave any opportunity to defame the Govt on its wrong and anti-policies against the downtrodden. He further said that successive Govts. had deplored the interests of these communities at all fronts. "With the formation of new coalition Govts., the Kalsotra.

He also disclosed that the reserved categories have already suffered a loss of more than 60000 posts against already regularized posts which were initially filled on

communities were having hopes is getting due benefit of the reservation but by bringing this ultravires recruitment policy, the present Govt. has doubled the negative approach of previous Govt. towards the SC/ST/OBC communities" said contractual, adhoc and temporary basis in shapes of RET, REZ, SPO, Aganwadi workers, temporary appointment in PHE, PDD and rural development department and other public sectors undertakings and corporations. Instead of clearing the huge backlog, the Govt. has unfortunately moved to bring new recruitment policy which will have no reservation provision.

Kalsotra appealed to the community ministers, legislators, social activists and leaders of various other organization to join hands to struggle against playing with the rights of these downtrodden classes.

Er. Roshan Choudhry while speaking on the occasion said that it is now the litmus test for present Govt. and in case the recruitment policy will be enforced in present form will unravel its poll promises of symapathies for reserved classes. He cautioned the Govt. to revisit the new recruitment policy to protect and safeguard their interests otherwise these communities will be forced to adopt agitational path.

Prof Kali DassGeneral Secretary backward classes called for implementation of 27% reservation for OBCs as per Mandal Commission.

Sham Lalbasson President Dalit Chetena Manch while speaking said that it is the unfortunate decision of the State Government to dream this negative policy so it is immediately to be reversed otherwise people who favored the parties to run the Government will change their decision against and will come on the road in a big way..

-R.K.KALSOTRA
9419182452

+++

VOICE OF BUDDHA

Publisher : Dr. UDIT RAJ (RAM RAJ), Chairman - Justice Publications, T-22, Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001, Tel: 23354841-42

● Year : 18 ● Issue 13 ● Fortnightly ● Bi-lingual ● Total Pages 8 ● 16 to 31 May, 2015

Less than 8% SCs in Maharashtra get to avail education quota, study finds

67% SCs say missed benefits for 'admin problems', says report by TISS as part of nationwide study.

A report on the educational status of scheduled castes in Maharashtra has found that the benefits of reservation in education have reached the children of only 7.6 per cent SC households.

The report on Maharashtra has been compiled by the Tata Institute of Social Sciences (TISS). It is part of a nationwide study of SCs and STs in 19 states, commissioned by the Indian Council of Social Science Research.

The Maharashtra report notes that the count of SCs availing reservation is low despite the fact that 77.8 per cent SCs said they were aware of the reservation policy. In fact, 67.4 per cent SCs said they couldn't take the reserved seats because of "administrative and related problems".

"The very term 'administrative problems' indicates that the administrative processes for reservations are problematic in nature. A number of reasons were cited by the households, ranging from non-cooperation of schools or colleges, to apathy among the officials in charge," says the report by Prof Govardhan Wankhede, former dean of TISS's School of Education.

"The state of Maharashtra has a long history of social and political reforms and is considered a progressive state when it comes to SC/ST issues," Wankhede told The Indian Express. "Given the current global situation and the role of education for social inclusion, it is pertinent to know the educational situation of SCs... An intensive field work was carried out in Nagpur, Osmanabad, Jalgaon, Sindhudurg and Mumbai. The respondents were students from class-8 to higher levels of education, besides parents, teachers, heads of households, schools and colleges," he said. The study covered 1,120 SC households (2,547 members) and 466 non-SC households (1,056 members). The non-SCs had a comparable background and included OBCs, Muslims, Marathas, Rajputs and Brahmans.

The report says that data on adequacy of provisions and utility of availing benefits provided by the government is disheartening. While 80.5 per cent SCs were aware of post-matric scholarship, only 17.6 per cent had availed this facility. And though 79.8 per cent were aware of freeships and scholarships, just 22.1 per cent availed those. The study notes that 23.4 per cent SC household heads want their children to become doctors and engineers, while 19.6 per cent want them to be teachers or PhD degree holders and researchers. "The awareness of importance of education among household heads for their children, therefore, seems to be high. However, the question of expectations and the means to fulfil these expectations need further probing,.." it says. Some of the study's other findings

TRADITIONAL OCCUPATIONS: With 19.8 per cent SC households still in traditional occupations, the study says it is evident that most SC communities have not been able to break through the traditional barriers and obtain jobs in other fields.

ENGLISH: Among SC families, 61.9 per cent first children, 44.7 per cent second children and 20 per cent third children were studying in Marathi institutions. "The demand for English medium institutions is slowly rising. As the government has not been able to fulfil this demand... most of the institutions that provide English education tend to be privately run," the study says.

The positives To questions about discrimination in educational institutions, 96.3 per cent households agreed that access to schools was easy. The study says this is a positive indicator but calls for a further probe as to whether SC household heads can admit their children in the schools of their choice. In college, 64.5 per cent SC students said they had never faced discrimination on the basis of "economic status and condition" while 11.4 per cent said they had faced discrimination frequently and 18.6 per cent said that they sometimes did. "On the basis of 'caste', 63.8 per cent responded in the negative while 19.3 per cent said that they faced discrimination sometimes. Additionally, 12.1 per cent students said that they frequently faced caste discrimination. Discrimination based on caste, therefore, summed up to a significant 31.40 per cent. On basis of 'religion', 11.4 per cent said they faced discrimination sometimes and 10.1 per cent frequently," the study says. "It was observed that SC students face direct and indirect discrimination even when using the affirmative action policy [reservation]," the report says. "For example, students are usually at the receiving end of comments such as 'you are being admitted to this college because of the quota system', 'you don't deserve to be here', 'you are using up all our (open category) seats', and so on. Therefore, comments and taunts, which may not always be direct, are a very common feature of a SC student's life."

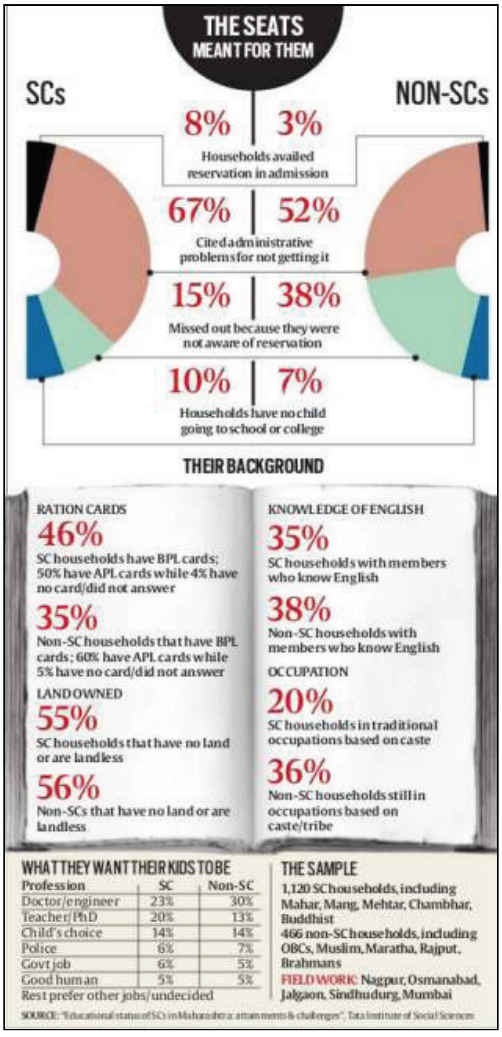

- Courtesy The Indian Express (29 May, 2015)

+++

Who are Responsible for Dangawas Dalit Massacre

Three Dalits were mowed down under tractors and a dozen others were wounded following the killings. The dispute over a piece of land turned violent when the Jats held a Panchayat to resolve the issue and summoned the Dalits to attend. The crowd at the Jat panchayat went berserk, attacked the Dalits, bulldozed their houses, assaulted their women and chased the fleeing men on tractors and 3 were crushed to death while 14 others, including six women, were injured. On the next day, hundreds of armed attackers reached the hospital and surrounded it to prevent doctors from treating the injured Dalits. Police force from half-a-dozen police stations had to be called to ensure medical treatment to the injured, some of whom were later taken to Ajmer.

In the hospital, 2 more died and it really shook humanity again. Lots of messages started pouring in through SMS and whatsapp box, lamenting that how ruthlessly they had been killed. A bizarre situation was created that what to tell them? Most of these were from the stock of All India Confederation of SC/ST Organizations and I suggested them that instead of expressing their grief and sorrow on the incident, why don't they swoop into action to strengthen the Confederation by driving membership, holding meetings, activism on social media and fund collection. Only discussing and condemning will not be the solution and to mitigate such social criminality and practices, it needs action on our part. We cannot expect from perpetrators not to discriminate but unity of our struggle will definitely discourage them. This is what is at our command, but usually we discuss and debate, then forget. The target of achieving 10 lac membership is not a joke and each of us has to incessantly work.

So only blaming caste Hindus is not the solution and let us do what we can do, and that is the solution if we want to end brutality, discrimination and inequality. There are other prescriptions to observe are not to resort to sub-casteism for petty gains, abjure ego and get united.

-Dr. Udit Raj

Publisher, Printer and Editor - Dr. UDIT RAJ (FORMERLY KNOWN AS RAM RAJ), on behalf of Justice Publications, T-22, Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001, Tel: 23354841-42, Telefax:23354843, Printed at Sanjay Printing Works, WZ-4A, Basai Road, New Delhi.
Website : www.uditraj.com E-mail: dr.uditraj@gmail.com Computer typesetting by C. L. Maurya